REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

हिन्दू धर्म परम्परयें एवं पर्यावरण संरक्षण

राम निवास यादव

प्रस्तावना :

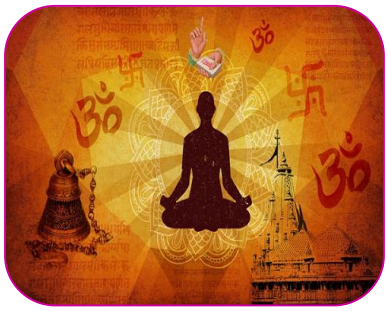

हिन्दू धर्म की प्रमुख विशेषता इसकी वैचारिक विभिन्नता है। हिन्दू धर्म के लगभग 3000 वर्ष के लम्बे इतिहास में विभन्न मतों व विचारधाराओं का जन्म हुआ। हिन्दू धर्म की मान्यता में सभी के लिये एक समान जीवन जीने का रास्ता नहीं है बल्कि विभिन्न जीवन जीने की पद्धतियां हैं। बहुत लम्बे समय के अतीत के विभिन्न विचारों के संगम के रूप में हिन्दू धर्म का जन्म हुआ। हिन्दू धर्म में विभिन्न विचारों के विभिन्न मत–मतान्तरों का समावेश हैं। फिर भी यह जीवन जीने का एक अद्भुत दर्शन है। भारत देश की धरती पर पिछले 3000 सालों से उत्पन्न हुए विभिन्न मतों व विचार का योग हिन्दू धर्म है। हिन्दू धर्म की प्रमुख विशेषता है कि मोक्ष प्राप्त करने के विभिन्न रास्ते हैं।

ऐतिहासिक दुष्टिकोणः–

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से हम देखें तो हिन्दू धर्म सात्विक चिन्तन एवं आध्यात्मिक जीवन में विश्वास रखता है। इस धर्म का दर्शन शाकाहार भोजन में निहित है। शाकाहारी व्यक्ति पर्यावरण को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। शाकाहारी जीवन से हम अपने पारिस्थितिक तन्त्र को संतुलित रख सकते हैं। मांसाहार पर आधारित अर्थव्यवस्था सभी के जीवन को दुष्कर बना देती है व विश्व शान्ति के प्रयासों में भी बाधक बन सकती है। शाकाहारी व्यक्ति ही सबसे सभ्य व्यक्ति होता है जो दूसरे प्राणियों के जीवन की कीमत पर नहीं जीता जबकि मांसाहारी व्यक्ति दूसरे प्राणियों के जीवन की कीमत पर जीता है। दूसरी तरफ एक शाकाहारी व्यक्ति की सोच व जीवन सात्विक होता है। तथा उसका मन व मस्तिष्क भी संतुलित होता है। इस प्रकार हिन्दू धर्म के दर्शन के मुताबिक शाकाहार पर्यावरण को सुरक्षित रखने का एक उत्तम यन्त्र है।

भारत के लोग धार्मिक नेताओं के उपदेशों की बदोलत प्रारम्भ से ही प्रकृति संरक्षण की भावना से ओत–प्रोत हैं। वैदिक काल में वृक्षों को बहुत अधिक महत्व दिया गया। ऋग्वेद में कहा गया है।

''मूलतोः ब्रह्म रूपाय मध्यतो विष्णु रूपायः।
अग्रतः शिव रूपाय, वृक्ष राजाय ते नमः''।।

अर्थात् वृक्ष के मूल में ब्रह्म का निवास है, मध्य में विष्णु का निवास है, अग्र भाग में शिव का निवास है ऐसे वृक्षराज को मैं नमन करता हूँ। हमारे सभी वेद विभिन्न वृक्षों, झाड़ियों व फूलों के महत्व के संदर्भो से भी पड़े हैं। हमारे अधिकतर हिन्दू देवी–देवताओं ने अपने वाहन के रूप में विशेष पशुओं एवं पक्षियों का इस्तेमाल किया है। जैसे गणेश जी को चूहे पर दिखाना, गणेश के मूँह पर हाथी की सूण्ड लगाना, दुर्गा जी द्वारा शेर वाहन के रूप में इस्तेमाल करना, माँ सरस्वती द्वारा हंस का स्तेमाल करना, कृष्ण जी का गायों के संग दिखाना आदि सभी इस बात के सूचक हैं कि हिन्दू धर्म में सभी जीव–जन्तुओं को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इस प्रकार शेर, चीता, हाथी, मोर, हंस, उल्लू, गिद्ध, बैल, सांड़ चूहा, घोड़ा आदि की हिन्दू धर्म में विशेष मान्यता है। हिन्दू धर्म के मानने वालों ने इन जानवरों को सम्मान देकर संरक्षण को बढ़ावा दिया है।

हमारे पवित्र ग्रन्थों में कल्पवृक्ष व पारीजात वृक्षों की महिमा का गुणगान किया गया हे। पद्म पुराण में लोटस, वट वृक्ष व फ्लाया वृक्षों के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। इनमें देवी–देवताओं का वास बताया गया है। अधिकतर हिन्दू पीपल वृक्ष की पूजा करते हैं ब्रह्म पुराण में पीपल वृक्ष को वृक्षों का राजा बताया गया है। तुलसी, बेल पत्र, चन्दन नारियल, केला, अशोका, कमल व मरहवा के पत्तों, फूलों एवं फलों का विभिन्न धार्मिक अवसरों पर पूजन किया जाता हैं।हमारे साधु सन्त वनों के मध्य में अपना आश्रम बनाते थे। मेघदूत, अभिज्ञान शकुन्तलम, महाभारत व रामायण में भी प्रकृति व मानव के घनिष्ठ सम्बन्धों को दर्शाया गया है। हमारे देश में जंगलों के कुछ भाग को धार्मिक दृष्टि से संरक्षित रखना भी एक परम्परा रही है। इन जंगलों में देवी–देवताओं का निवास मानकर उनकी सावधानी से रक्षा की जाती थी व इन जंगलों से पेड़ काटना वर्जित होता था तथा देवी–देवताओं के मध्य भय से कोई भी पेड़ काटने का साहस नहीं कर सकता था। इस प्रकार हमारे प्राचीन साधू–सन्तों ने बहुत से वृक्षों की प्रजातियों को समाप्त होने से बचाया।

आधुनिक दृष्टिकोणः–

अब हमारे देश में हिन्दू धर्म मानने वालों के सिद्धान्त एवं व्यवहार में दिन रात का अन्तर है। यही एक कारण है कि आज भारत का पर्यावारण ह्रास की ओर अग्रसर है। हिन्दू धर्म के अनुयायी उनके देवी देवताओं एवं पूर्वजों द्वारा बताए गये प्रकृति प्रेम को भूलते जा रहे हैं। आधूनिक पीढ़ी ने हिन्दू धर्म के समाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्य पूर्ण रूप से सुविधा जनक प्रवृति में तबदील कर दिये हैं। प्रकाश का पर्व दिवाली हमारे द्वारा शोर एवं धूआँ की दिवाली में बदल दिया गया है। केन्द्रिय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के द्वारा किये गये शोध कार्य के अनुसार दिवाली से पहले, दिवाली के दिन एवं दिवाली के बाद लिये गये हवा के नमूनों की संरचना में भारी अन्तर पाया गया है। दिवाली वाले दिन अन्य प्रदूषकों का स्तर भी कई गुणा बढ़ जाता हैं। इस प्रकार शोर प्रदूषण व वायु प्रदूषण से अनेकों दिल के व अस्थमा के मरीजों का असामयिक निधन हो जाता है। हमारी आधुनिक संस्कृति ने खुशी के त्यौहार को मौत के आलम में परिवर्तित कर दिया है। दिवाली के दिन वातावरण में नाइट्रोजन आक्साईड, कार्बन मोनोक्साइड व धूल के कणों की मात्रा बढ़ जाती है।

रंगों का त्यौहार होली भी विभिन्न रासायनिकों युक्त रंगों की बौछार में तबदील कर दिया गया है। होली के दिन होलिका दहन के अवसर पर अत्यधिक मात्रा में इंधन को जलाना एक तरफ इंधन के संकट को बढ़ाता है तो दूसरी ओर

हवा में कार्बन–डाइ–आक्साइड में दृद्धि होती है। कुछ क्षेत्रों में इस अवसर पर पटाखे चलाये जाते हैं। जिससे ध्वनी प्रदूषण व वायु प्रदूषण में इजाफा होता है। इस अवसर पर कुछ व्यक्ति शराब का अत्याधिक सेवन करते हैं, जिससे लड़ाई–झगड़े व दंगा–फसाद होते हैं व इससे मानसिक एवं सांस्कृतिक प्रदूषण को बढ़ावा मिलता है। इस अवसर पर कुछ लोग गाँवों में तालाबों, जोहड़ों व नहरों में भी विभिन्न रासायनों से युक्त रंगों को मिला देते हैं जिससे जल प्रदूषण को बढ़ावा मिलता है।

सामूहिक स्नानः–

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने जल प्रदूषण पर किये गये अनेक शोध कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा है कि गंगा नदी में पिछले तीन कुम्भ मेलों के दौरान प्रदूषण का स्तर कई गुणा बढ़ गया। नदियों एवं तालाबों में सामूहिक स्नान करना हिन्दुओं की एक परम्परा रही है व सामूहिक स्नान से जल का गुणात्मक ह्रास होता है। प्रदूषित जल में स्नान करने से कई प्रकार के रोग होने का डर बना रहता है। सामूहिक स्नान से जल में विभिन्न प्रकार के रोगाणु वाहक किटाणु व्याप्त हो जाते हैं। सामूहिक स्नान के दौरान जल में प्रसाद, फूल व घी का विसर्जन समस्या को और अधिक बढ़ा देता है। सामूहिक स्नान से जल में ऑरगैनिक पदार्थों की वृद्धि हो जाने से जल प्रदूषित हो जाता है व इस प्रदूषित जल में स्नान करने वालों को अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं जिनमें हैजा, पेंचिश व आंत्रशोध प्रमुख हैं। अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ है कि प्रत्येक तीर्थ यात्री प्रतिदिन स्नान के दौरान 33 ग्राम जैवीय पदार्थ पानी में छोड़ता है। सामूहिक स्नान ने हमारी पवित्र नदियों गंगा एवं यमुना की पवित्रता भी भंग कर दी है।

जागरण एवं रतजगाः–

भारत के कुछ भागों में जागरण एवं रतजगे के कारण रातें निद्रा रहित बन जाती हैं। प्रतिवर्ष दूर्गा पूजा के दौरान अकेले पटना शहर में 400 से 500 छोटे–बड़े पंडाल लगते हैं व प्रत्येक पंडाल में तेज ध्वनि के लाउडस्पीकरों द्वारा सारी रात ऊँची आवाल में संगीत चलता रहता है जिससे ध्वनि प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है। दूर्गा पूजा के दौरान किये गये शोध कार्य की रिपोर्ट बताती है कि अधिक शोर से 64 प्रतिशत व्यक्तियों ने सरदर्द, थकान एवं अनिद्रा की शिकायत की। 85 प्रतिशत लोगों का मत था कि जागरण व रतजगे के दोरान ऊँची आवाज पर प्रतिबन्ध लगना चाहिए। परन्तु यह आश्चर्य की बात है कि अधिकतर लोगों द्वारा यह मानने पर भी कि लाउड स्पीकर ध्वनि प्रदूषण को जन्म देते हैं व इनका इस्तेमाल बन्द होना चाहिए परन्तु धार्मिक अन्धता के कारण वे भी इनका विरोध नहीं कर सकते जिससे समस्या यथावत बनी रहती है।

शव एवं अस्थि विसर्जनः–

शवों को पवित्र नदियों में बहाना भी एक प्रमुख समस्या है और गंगा नदी के तट पर स्थित शहरों में यह घटना प्रतिदिन घटित होती है। इकोफ्रैण्ड्स नाम की एक संस्था ने 180 शवों को गंगा से बाहर खींच कर निकाला इससे इस समस्या की गम्भीरता का अहसास होता है। वाराणासी शहर के पास भी शवों को गंगा में प्रवाहित करते देखा जा सकता है। कई बार ऐसा धार्मिक कारणों से होता है तो कई बार इसके पीछे आर्थिक कारण भी होते हैं। कुछ गरीब व अनाथों के शव

हिन्दू पद्धति के अनुसार अंतिम संस्कार न कर सकने के कारण नदियों में प्रवाहित कर दिये जाते हैं।

हिन्दू धर्म में व्यक्ति के मरने के बाद उसकी अस्थियों को नदियों में प्रवाहित करना भी एक धार्मिक अनुष्ठान माना जाता है व ऐसा मानना है कि मरने वाले की अस्थियों को बिना प्रवाहित किये मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है जो कि केवल एक धर्म अन्धता के सिवाय और कुछ नहीं है। अधिक मात्रा में अस्थियों को जल में विर्सजित करने से जल प्रदूषण की समस्या में इजाफा होता है।

देवी देवताओं की मूर्तियों का विसर्जनः–

देवी देवताओं की मूर्तियों का पूजा के बाद पवित्र नदियों में विसर्जन भी जल प्रदूषण की समस्या को बढ़ावा देता है। पूजा करना एक व्यक्तिगत मुद्दा है व आज बढ़ी हुई जनसंख्या के युग में प्रत्येक परिवार का अपना अलग देवता है जिसकी उस परिवार द्वारा मूर्ति को आधार मान कर पूजा की जाती है। हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार अपने पूर्वजों को मृत्यु के बाद अग्नि को समर्पित कर देना व देवी देवताओं की मूर्तियों को जल में विसर्जित कर देना शुभ माना जाता है क्योंकि अग्नि व जल दोनों ही शुद्ध करने वाले कारक माने जाते हैं। अतीत में मूर्ति विसर्जन एक समस्या नहीं थी क्योंकि मूर्ति बनाने में प्राकृतिक सामान का प्रयोग किया जाता था व मूर्ति विसर्जन भी व्यक्तिगत समारोह न होकर सामूहिक समारोह के रूप में होता था। परन्तु अब मूर्ति बनाने का सामान अप्राकृतिक होता है जो अनेकों हानिप्रद रासायनों से युक्त होता है जैसा कि केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की रिपोर्ट में कहा गया हे। दुर्गा पूजा के दसवें दिन हुगली नदी हजारों मूर्तियों का कब्रिस्तान बन जाती है। सन् 1993 से 1994 के दोरान केन्द्रिय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड दिल्ली की रिर्पोट के अनुसार दशहरे के दिन हुगली नदी में प्रति वर्ष 15000 के लगभग मूर्तियाँ विसर्जित की जाती है। अध्ययन में कहा गया हैं कि इस प्रकार 17 टन वार्निश व रंग–रोगन तथा 32 टन विभिन्न प्रकार के रंगों का विसर्जन अकेली हुगली नदी में ही होता है। अन्य रसायनों के साथ पानी में मैगनीज, पारे व क्रोमियम की मात्रा बढ़ जाती है जिससे पानी प्रदूषित हो जाता हैं तथा जल में रहने वाले जानवर मर जाते हैं। दशहरे वाले दिन हुगली नदी के पानी में तेल व ग्रीज की मात्रा 0.99 मिलीग्राम प्रति लीटर व भारी धातुओं की मात्रा 0.14 मिलीग्राम प्रति लीटर बढ़ जाती है। भारत में यही केवल एक नदी नहीं हैं जो इस समस्या से ग्रसित हैं। भारत की बहुत सी झीलों में भी हजारों टन मिट्टी इन मूर्तियों के विसर्जन से भर जाती है। मिट्टी के अलावा काफी मात्रा में रंग–रोगन, कपड़े, बांस की लकड़ियाँ व धातुऐं भी झीलों में प्रवेश कर उन्हें प्रदूषित कर देती हैं।

नैतिक मूल्यों में गिरावट ने व्यक्ति को लालची एवं भ्रष्टाचारी बना दिया है। हम अपनी भोगवादी प्रवृति के कारण पर्यावरण के प्रति अपने दायित्वों को भूल बैठे हैं जिससे पर्यावरण के शोषण एवं ह्रास को बढ़ावा मिला है मानव की स्वार्थी एवं व्यापारीकरण एवं दिखावे की प्रवृति ने भी पर्यावरण को असुंतुलित करने में अहम् भूमिका निभाई है। लोग उत्सवों एवं समारोहों में पटाखों एवं मूर्तियों पर अधिक धन खर्च करके अपने आप को बड़ा दिखाने का प्रयास करते हैं जो कि केवल मात्र संकुचित मानसिकता का ही परिचायक है।

पहले जमाने में जब लोग गंगा में स्नान करते थे तो पहले अपने घर में अच्छी तरह नहाकर फिर गंगा में स्नान करते थे जिससे पानी में प्रदूषण कम होता था। अब प्रत्येक प्रकार की गन्दगी गंगा में प्रवाहित की जाती है। परम्पराओं एवं

मान्यताओं को गलत रूप में समझा जाता हैं। हमारे धार्मिक नेता एवं अध्यापक धार्मिक परम्पराओं एवं उपदेशों को लोगों तक सही तरीके से प्रचारित प्रसारित करने में असफल रहे हैं। उन्हें जो कुछ करना चाहिए था वह उन्होने नहीं किया। वे धर्म को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करके धन दोलत का संग्रह करने में व्यस्त हो गये। शिक्षण संस्थाओं ने भी अपनी भूमिका सही नहीं निभाई। हिन्दू धर्म के ठेकेदारों ने भी अपना दायित्व ठीक प्रकार से नहीं निभाया व धार्मिक भावनाओं का व्यापारीकरण कर दिया गया।

परन्तु अब सुखद पहलू यह हे कि लोग कुछ–कुछ पर्यावरण एवं पारिस्थिकी जैसी संकल्पनाओं के प्रति जागरूक हो रहे हैं। हमारी पर्यावरणीय पारम्परिक परम्पराओं को स्कूली पाइयक्रमों में समायोजित किया जाना चाहिए। प्रकृति ही प्रत्येक वस्तु का आधार है। हमारे देवी–देवता प्राकृतिक शक्तियों के सूचक हैं। हमें उन बातों को ग्रहण करना है जिनसे पयावरण का सरंक्षण किया जा सके व सनातन विकास को बढ़ावा मिल सके। हमें अपने अपको बदलना पड़ेगा व दूसरों को भी बदलाव के लिए प्रेरित करना पड़ेगा। पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए जो भी हम कार्य करें मानव कल्याण को सबसे उपर रखें। अतः आज की सबसे बड़ी आवश्यकता ऐसे धर्म को ग्रहण करने की हे जो पर्यावरण के संरक्षण पर आधारित हो हमारा चिन्तन सात्विक होना चाहिए व हमारी प्रवृति आध्यात्मिक होनी चाहिए तभी हम पयावरण को संतुलित रख सकेंगे।

REFERENCES

1. K.R. Sundrarajan amd Mahadivan 1997 : Hinduism Pubished by publiscation Bureau Punjab University Patiala.
2. Harbans Singh and Lal Mani Joshi 1996: An Inuroduction to the Indian religions; Published by Publication Bureau, Punjab University, Patiala, pp. 12-75.
3. C.Rajagopalachari: Hinduism, Doctrime and way of life. Published by the Hindustan Time Press, New Delhi.
4. Kishna Ram Bishnoi and Narsi Ram Bishnoi 2000 : Religon and Environment, Common wealth Publishers, New Delhi.
5. Anil Aggarwal: Down to Earth: Science and Environemt fortnightly Vol. 8 No. 18 February 15, 2000. A Publication of the centre for sicence and environment, New Delhi pp. 26&37.
6. G.K Gosh (1991): Environment-A spiritual dimension.Ashish Publications, New Delhi.
7. R.N. Yadav (1999) : Environment Pollution – It's causes, effects and control Monto Publishing House, New Delhi.